कृति ने पुलकित सम्राट को जन्मदिन पर तस्वीरें की साझा

बॉलीवुड अभिनेत्री कृति खरबंदा ने अपने पति पुलकित सम्राट को खास तरीके से बधाई दी है. कृति खरबंदा नेपुलकित सम्राट का जन्मदिन बेहद खास अंदाज़ में मनाते हुए सोशल मीडिया पर उनदोनों की कुछ अनदेखी और खूबसूरत तस्वीरें साझा की हैं, जिनसे उनके फैंस को उनके निजी पलों और साथ बिताए गए खास लम्हों की झलक देखने को मिली.

तस्वीरों के साथ कृति ने एक प्यार भरा नोट भी लिखा, जिसमें उन्होंने लिखा, 'हैप्पी बर्थडे माय फेवरेट! हमेशा साथ, हमेशा मेरा, हमेशा हमारा.' हालांकि सोशल मिडिया पर सुर्खी बटोर रहा कृति का यह प्यार भरा संदेश, न सिर्फ उनके रिश्ते की गहराई और अपनापन बता रहा है, बल्कि उनके बीच के भावनात्मक जुड़ाव को भी बखूबी दर्शा रहा है.

गौरतलब है कि साझा की गई इन अनदेखी तस्वीरों में कृति और पुलकित की शानदार केमिस्ट्री और सहज बॉन्डिंग साफ नज़र आ रही है, जिसने एक बार फिर फैंस का दिल जीत लिया है. दोनों की मुस्कान, साथ में बिताए सुकून भरे पल और एक-दूसरे के प्रति प्यार ने पोस्ट को और भी खास बना दिया.

यही वजह है कि कृति और पुलकित को इंडस्ट्री के सबसे पसंदीदा कपल्स में गिना जाता है. उनकी सादगी, ईमानदार रिश्ते और खुलकर प्यार जताने की आदत उन्हें फैंस के और करीब लाती है. कृति की यह जन्मदिन की शुभकामना न सिर्फ पुलकित के खास दिन का जश्न है, बल्कि उनके रिश्ते की गर्माहट और साथ को और भी खूबसूरती से उजागर कर रही है.

भाग्यश्री मेरे लिए सच में बड़ी बहन जैसी बन गई हैं : आनंदिता साहू

अभिनेत्री आनंदिता साहू का कहना है कि सन नियो के शो 'सत्या साची' की शूटिंग के दौरान भाग्यश्री मिश्रा उनके लिए सच में बड़ी बहन जैसी बन गई हैं. दो बहनों का रिश्ता बहुत खास होता है. कुछ ऐसा ही भावुक कर देने वाला रिश्ता सन नियो के शो 'सत्या साची' शो में देखने को मिल रहा है. अब तक दर्शकों ने सत्या और साची के प्यार भरे पल, छोटी-छोटी नोंकझोंक और दो दोनों बहनों के अटूट रिश्ते को देखा है. अब शो में यह रिश्ता एक नए और भावनात्मक मोड़ पर पहुँच गया है, जहां सत्या अपनी बड़ी बहन साची की रक्षा के लिए एक बड़ा फैसला लेती है.

शो में सत्या का किरदार निभा रहीं आनंदिता साहू ने कहा, 'शूटिंग के दौरान भाग्यश्री मेरे लिए सच में बड़ी बहन जैसी बन गई हैं. हमारी बॉन्डिंग ऑन-स्क्रीन ही नहीं, ऑफ-स्क्रीन भी बहुत खास है. शो में सत्या, विक्रांत से शादी सिर्फ अपनी बहन की रक्षा के लिए करती है. वह अपने जीवन को लेकर यह बहुत बड़ा त्याग कर रही है. सच कहूँ, तो यदि असल जिंदगी में भी मुझे भाग्यश्री के लिए ऐसा कोई बलिदान देना पड़े, तो मैं बिना सोचे समझे करूँगी.'

एक नई सोच की फैंटेसी ड्रामा फिल्म है राहु केतु : सूरज सिंह

बी-लाइव प्रोडक्शन के सह-संस्थापक और निर्माता सूरज सिंह का कहना है कि उनकी आने वाली फिल्म राहु केतु मिथक से परे एक नई सोच की फैंटेसी ड्रामा फिल्म है.

जिस दौर में फैंटेसी फिल्मों को अक्सर पौराणिक कथाओं या धार्मिक संदर्भों से जोड़कर देखा जाता है, उसमें 'राहु केतु' जानबूझकर एक ऐसी राह चुनती है, जहां उसकी कहानी किसी मिथकीय कथा या धार्मिक पुनर्कथन पर आधारित नहीं, बल्कि कल्पना, विश्वास प्रणालियों और मानवीय टकरावों से प्रेरित हो. इसे एक न्यू-एज फैंटेसी ड्रामा भी कहा जा सकता है. फिल्म 'राहु केतु' में फैंटेसी को प्रतीकात्मक सहारे की तरह नहीं, बल्कि कहानी कहने के एक सशक्त माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया गया है.

सूरज सिंह ने कहा, 'राहु केतु एक फैंटेसी ड्रामा है, जो विचारों से प्रेरित है, लेकिन मिथक से बंधा नहीं है. हालांकि हम शुरू से ही यह बात साफ रखना चाहते थे कि हम किसी धार्मिक कहानी को दोहराना नहीं चाहते, बल्कि इस फिल्म को फैंटेसी के जरिए विश्वास प्रणालियों और मानवीय टकरावों को एक समकालीन, भावनात्मक और सार्वभौमिक अंदाज़ में पेश करना चाहते हैं.'

निर्माता ने कहा, 'फैंटेसी हमें डर, शक्ति, आस्था और चुनाव जैसे विषयों पर बात करने की आज़ादी देती है, लेकिन ऐसे किरदारों और परिस्थितियों के जरिए, जिनसे दर्शक भावनात्मक रूप से जुड़ सकें. अपने मूल में, राहु केतु एक मानवीय कहानी है, जिसे कल्पनाशील दृष्टि से कहा गया है.'

700 करोड़ के क्लब में शामिल हुई 'धुरंधर'

बॉलीवुड स्टार रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधर' भारतीय बाजार में 700 करोड़ रूपये की कमाई करने वाली पहली बॉलीवुड फिल्म बन गयी है. फिल्म 'धुरंधर' 05 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी. इस फिल्म में रणवीर सिंह लीड रोल में हैं. इनके अलावा अक्षय खन्ना, अर्जुन रामपाल, संजय दत्त और आर माधवन जैसे सितारे हैं. फिल्म धुरंधर बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रही है. इस फिल्म की चर्चा फिल्म इंडस्ट्री के गलियारों में खूब चल रही है. फिल्म 'धुरंधर' ने इतिहास रच दिया है.

स्पाई थ्रिलर 'धुरंधर' बॉक्स ऑफिस पर लगातार नए कीर्तिमान बना रही है. रिलीज के पहले दिन से लेकर अब तक धुरंधर बॉक्स ऑफिस पर धमाकेदार प्रदर्शन कर रही है. सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार फिल्म 'धुरंधर' ने पहले सप्ताह में भारतीय बाजार में 207.25 करोड़ की जबरदस्त कमाई की थी.

फिल्म 'धुरंधर' ने दूसरे सप्ताह में 253. 25 करोड़ का शानदार कारोबार किया था. तीसरे सप्ताह में भी फिल्म 'धुरंधर' ने 172 करोड़ की धमाकेदार कमाई की. इस फिल्म ने 22वें दिन 15 करोड़,23वें दिन 20.5 करोड़ और 24वें दिन 22.5 करोड़ का कारोबार किया.

शुभांगी और इंदिरा हैं सबसे बड़ी प्रेरणा : अमनदीप सिद्धू

ज़ी टीवी का शो 'गंगा माई की बेटियां' अपनी दिलचस्प कहानी और दमदार महिला किरदारों के चलते दर्शकों के बीच एक अलग पहचान बना चुका है. शो में स्नेहा (अमनदीप सिद्धू), दुर्गावती (इंदिरा कृष्णा), गंगा माई (शुभांगी लाटकर) और इंदु (श्रद्धा जायसवाल) जैसे चार मजबूत महिला किरदार देखने को मिलते हैं. इन सभी किरदारों को उनकी मजबूती, बेबाकी और सच्चाई के लिए दर्शकों से काफी तारीफें मिली है. ग्रे शेड्स के साथ गढ़े गए ये किरदार उन्हें और ज्यादा असली और जुड़ा हुआ बनाते हैं. शो में स्नेहा का किरदार निभा रहीं अमनदीप सिद्धू मानती हैं कि 'गंगा माई की बेटियां' इसलिए अलग है क्योंकि इसमें महिलाओं को बिना किसी सांचे में ढाले, मजबूत, अपनी राय रखने वाली और हालात से लड़ने वाली दिखाया गया है, जो असल ज़िंदगी की आवाज़ और संघर्ष को सामने रखता है. शो की इस अनोखी खासियत को लेकर अमनदीप कहती हैं, 'दुर्गावती, स्नेहा, गंगा माई और इंदु, हम चारों ही बहुत मजबूत सोच वाली और जुझारू महिलाएं हैं.

कंवर ढिल्लो को मिला पहला इंडियन टेलीविजन एकेडमी अवॉर्ड

अभिनेता कंवर ढ़िल्लो को शो 'उड़ने की आशा' के लिए पहला इंडियन टेलीविजन एकेडमी अवॉर्ड् मिला.

स्टार प्लस पर प्रसारित होने वाले इंडियन टेलीविजन एकेडमी अवॉर्ड्स में टैलेंट, परफॉर्मेंस और कहानियों को सम्मान दिया जाता है. सालों से इस मंच को देशभर के दर्शकों का खूब प्यार मिला है, और इस साल यह इसलिए और भी खास है क्योंकि यहअवॉर्ड् अपनी सिल्वर जुबली यानी शानदार 25 साल पूरे कर रहा है. इस समारोह में कई यादगार जीतें देखने को मिलीं, लेकिन इसमें कंवर ढिल्लों की जीत हमारे लिए खास तौर पर बहुत निजी और भावनाओं से भरा पल बन गई.

इस ऐतिहासिक रात का अपना अनुभव साझा करते हुए कंवर, जो स्टार प्लस के शो उड़ने की आशा में सचिन का किरदार निभा रहे हैं, कहते हैं, 'इंडियन टेलीविजन एकेडमी अवॉर्ड्सके 25वें साल का हिस्सा बनना सच में बहुत खास था. यह साल मेरे लिए इसलिए और भी यादगार बन गया क्योंकि मैं दो सिल्वर जुबली समारोहों का हिस्सा रहा स्टार परिवार अवॉर्ड्स, जिसे मैंने होस्ट किया, और इंडियन टेलीविजन एकेडमी अवॉर्ड् दोनों बड़े मौकों से जुड़ना मेरे लिए इस साल को कभी न भूल पाने वाला बना गया.

कंवर ने अपनी जीत पर बात करते हुए कहा, 'उड़ने की आशा के लिए बेस्ट एक्टर जूरी अवॉर्ड जीतना इस रात को बेहद खास बना गया. यह मेरा पहला इंडियन टेलीविजन एकेडमी अवॉर्ड् था, और 25वें साल के जश्न में इसे पाना इसे और भी यादगार बना गया. उस भव्य मंच पर खड़े होकर ट्रॉफी थामना ऐसा पल था, जिसे मैं हमेशा संजोकर रखूंगा.' यह पल तब और भी भावनाओं से भर गया जब उनकी जीत को उनका परिवार खुद सामने बैठकर देख रहा था. कंवर कहते हैं, 'मेरे परिवार और रिश्तेदार ऑडियंस में मौजूद थे और मेरे लिए तालियां बजा रहे थे.

अपरा मेहता की दमदार एंट्री

ठाकुर परिवार में एक बार फिर परंपराओं की गूँज सुनाई देने वाली है। सन नियो के लोकप्रिय शो 'प्रथाओं की ओढ़े चुनरी: बींदणी' में अब एक सशक्त और प्रभावशाली किरदार की एंट्री हो चुकी है.

जानी-मानी और वरिष्ठ अभिनेत्री अपरा मेहता शो में राजश्री बुआ की भूमिका में नजर आएँगी.

हाल ही में जारी प्रोमो में बुआ सा (अपरा मेहता द्वारा निभाया गया किरदार) को पूजा-पाठ में लीन देखा गया, जहाँ उनके सिर पर सलीके से ओढ़ी गई चुनरी सिर्फ एक परिधान नहीं, बल्कि घर की इज्जत और बड़ों के मान-सम्मान का प्रतीक बनकर उभरती है. वहीं, उनके लिए परंपराएँ और संस्कार किसी भी आधुनिक सोच और शिक्षा से कहीं ऊपर हैं और यही विश्वास ठाकुर परिवार की पहचान और मर्यादा को परिभाषित करता है.

शो से जुड़ने के अपने फैसले पर बात करते हुए अभिनेत्री अपरा मेहता बताती हैं, 'मैंने अब तक लगभग पैंतीस डेली शोज़ में काम किया है और शायद ही कोई टीवी चैनल बचा हो, जहाँ मैंने काम न किया हो, इसमें कुछ ऐसे चैनल भी हैं, जो अब अस्तित्व में नहीं हैं. लेकिन, सन नियो एकमात्र ऐसा चैनल था, जिसके साथ मैंने पहले कभी काम नहीं किया था. उस वक्त मुझे कई डेली शोज़ के ऑफर्स मिल रहे थे, लेकिन 'प्रथाओं की ओढ़े चुनरी: बींदणी' की कहानी और अपने किरदार के बारे में सुनते ही मुझे एहसास हुआ कि यही वो शो है, जिसे मैं करना चाहती हूँ.

नुसरत भरुचा ने बाबा महाकाल के दर्शन कर लिया आशीर्वाद

बॉलीवुड अभिनेत्री नुसरत भरुचा ने नए साल से पहले उज्जैन पहुंचकर बाबा महाकाल के दर्शन किए. नुसरत ने पुत्रदा एकादशी के पावन अवसर पर महाकालेश्वर मंदिर में आयोजित भस्म आरती में हिस्सा लिया, जहां वे पूरी तरह भक्ति में लीन नजर आई.यह नुसरत भरुचा का बाबा महाकाल के धाम में दूसरा दौरा था. तड़के सुबह आयोजित आरती के दौरान वे नंदी हॉल में बैठकर ध्यान और प्रार्थना करती दिखीं. इस विशेष अवसर पर मंदिर के पुजारियों ने नुसरत को महाकाल अंकित अंगवस्त्र प्रसाद स्वरूप भेंट किया, जिसे उन्होंने खुशी और श्रद्धा के साथ स्वीकार किया.दर्शन के बाद नुसरत ने मंदिर में की गई व्यवस्थाओं की सराहना की और अपने अनुभव साझा किए. उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के बावजूद दर्शन और आरती की व्यवस्था बेहद सुचारू और अनुशासित रही. नुसरत ने बताया कि बाबा महाकाल का आशीर्वाद उन्हें गहरी शांति, सकारात्मकता और नई ऊर्जा से भर देता है.

नुसरत भरुचा ने अपने करियर में अलग-अलग जॉनर की फिल्मों के जरिए एक मजबूत पहचान बनाई है. 'प्यार का पंचनामा' और 'प्यार का पंचनामा 2' से उन्हें खास लोकप्रियता मिली, जिसके बाद 'सोनू के टीटू की स्वीटी' और 'ड्रीम गर्ल' जैसी हिट फिल्मों में भी उन्होंने दमदार प्रदर्शन किया. हाल के वर्षों में 'छोरी' और 'छोरी 2' जैसी कंटेंट-ड्रिवन हॉरर फिल्मों में उनकी गहन और प्रभावशाली अदाकारी को दर्शकों और समीक्षकों दोनों से खूब सराहना मिली.

कृषि जगत

आंवला: सेहत का खजाना हर रोग का प्राकृतिक इलाज

आंवला जिसे भारतीय गूसबेरी भी कहा जाता है, आयुर्वेद में अमृतफल माना गया है. यह छोटा-सा हरा फल विटामिन-सी, कैल्शियम, आयरन, फाइबर और अनेक एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होता है, इसलिए अच्छी सेहत के लिए बेहद जरूरी माना जाता है. आंवले का नियमित सेवन शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, जिससे सर्दी-जुकाम, खांसी और मौसमी संक्रमण जल्दी नहीं होते. इसमें मौजूद विटामिन-सी शरीर में कोलेजन के निर्माण में मदद करता है, जिससे त्वचा को पोषण मिलता है और झुर्रियाँ देर से आती हैं. यही कारण है कि आंवला बाल, त्वचा और आंखों के लिए विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है.

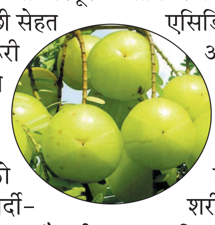

आंवला पाचन तंत्र के लिए भी किसी औषधि से कम नहीं है. इसमें मौजूद फाइबर कब्ज दूर करने में मदद करता है और पेट को साफ रखता है. गैस, अपच और एसिडिटी जैसी समस्याओं में आंवले का मुरब्बा या आंवला पाउडर उपयोगी होता है. आंवला लीवर को भी मजबूत बनाता है और शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करता है. डायबिटीज के मरीजों के लिए भी यह फायदेमंद है क्योंकि यह रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित रखने में सहायता करता है. नियमित रूप से आंवले का रस या चूर्ण लेने से रक्त शुद्ध होता है और त्वचा पर प्राकृतिक निखार आता है.

चने की दाल की खेती से बढ़ेगी आमदनी

चने की दाल की खेती आज किसानों के लिए न सिर्फ एक वैकल्पिक फसल बनकर उभरी है बल्कि कम लागत में अधिक लाभ देने वाली फसल के रूप में भी अपनी पहचान बना चुकी है. सूखी भूमि में भी उग जाने की क्षमता, कम सिंचाई की आवश्यकता और रोग-प्रतिरोधी किस्मों की उपलब्धता ने इसे छोटे और मध्यम किसानों के लिए और भी लाभकारी बना दिया है.

लागत के दृष्टिकोण से देखा जाए तो चने की फसल में धान या गेहूं जैसी अधिक खाद-बीज और श्रम की जरूरत नहीं होती. सामान्यत: अच्छी जुताई, संतुलित मात्रा में बीज, बेसिक खाद और दो-तीन सिंचाइयाँ ही पर्याप्त मानी जाती हैं. यही कारण है कि उत्पादन लागत अपेक्षाकृत कम रहती है और किसान जोखिम के बिना खेती कर पाते हैं. दूसरी ओर बाजार में चने की दाल की स्थिर मांग रहती है क्योंकि यह भारतीय भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा है. घरेलू उपयोग के साथ-साथ बेसन उद्योग और पशु आहार के लिए भी इसका प्रयोग होता है, जिससे किसानों को बेहतर दाम मिलने की संभावना बनी रहती है.

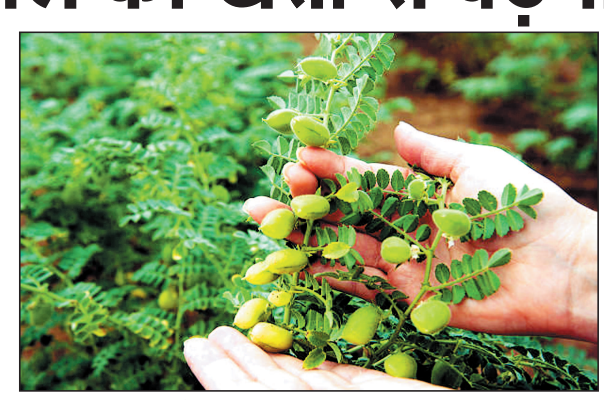

न्यूनतम समर्थन मूल्य की उपलब्धता भी किसानों को सुरक्षा देती है, हालांकि खुले बाजार में भी अक्सर उचित मूल्य मिल जाता है. इसके साथ ही चने की खेती मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने का कार्य भी करती है क्योंकि यह दलहनी फसल नाइट्रोजन स्थिरीकरण के माध्यम से जमीन को उपजाऊ बनाती है, जिससे अगली फसल की लागत घटती है और उत्पादकता बढ़ती है. कई किसान बताते हैं कि जब उन्होंने गेहूं या सरसों के साथ चने को शामिल किया तो कुल लाभ में वृद्धि हुई और फसल चक्र संतुलित हुआ.

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन और बढ़ती लागत के बीच ऐसी फसलें किसानों के लिए सहारा बनती हैं जो कम पानी और कम निवेश में तैयार हो जाती हैं. चने की दाल पोषण के लिए भी महत्वपूर्ण है, प्रोटीन से भरपूर होने के कारण इसकी मांग ग्रामीण से शहरी बाजार तक बनी रहती है. यही स्थायी मांग किसानों के लिए लाभ सुनिश्चित करती है. यदि किसान आधुनिक कृषि तकनीकें अपनाएं, बीज उपचार करें, समय पर बुवाई और वैज्ञानिक तरीके से कीट-रोग प्रबंधन करें तो उत्पादन और बढ़ाया जा सकता है.

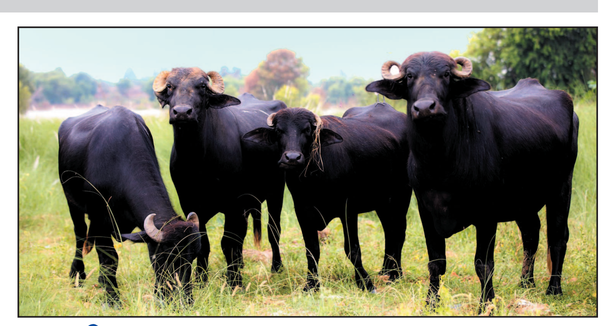

सर्द हवाओं में भैंसों की सुरक्षा

बेहतर देखभाल से बेहतर परिणाम

सर्दियों के मौसम में भैंसों की देखभाल विशेष सावधानी से करना बहुत जरूरी होता है, क्योंकि ठंड का सीधा असर उनके स्वास्थ्य, दूध उत्पादन और प्रजनन क्षमता पर पड़ता है. सबसे पहले उनके रहने के स्थान पर ध्यान देना चाहिए. खुली, ठंडी और नमी वाली जगह भैंसों के लिए हानिकारक होती है, इसलिए बाड़े को सूखा, साफ और हवा रुकने योग्य रखना चाहिए. फर्श पर फूस, भूसा या सूखी दरियां बिछाने से ठंड जमीन से नहीं चढ़ती और जानवर आराम महसूस करते हैं.

बहुत ठंड पड़ने पर बाड़े के दरवाजे-खिड़कियाँ रात में बंद रखें तथा सुबह धूप लगने दें ताकि प्राकृतिक गर्माहट मिल सके. नहाने के पानी में सर्दियों में ठंडा पानी इस्तेमाल न करें, गुनगुने पानी से स्नान कराना बेहतर रहता है. इसके साथ ही भैंसों के शरीर पर बोरा या जूट की गुनगुनी चादर डालना भी उन्हें ठंड से बचाता है.

खुराक के बारे में बात करें तो ठंड में ऊर्जा की जरूरत बढ़ जाती है, इसलिए संतुलित आहार देना बहुत महत्वपूर्ण है. हरी चारा, सूखा चारा, दाना उचित मात्रा में देना चाहिए. सर्दी में भूसा या सूखा चारा थोड़ा गर्म करके देना लाभदायक रहता है. साथ ही गुड़, दाने और खली का मिश्रण शरीर में गर्मी पैदा करने में मदद करता है. स्वच्छ और हल्का गुनगुना पानी पीने के लिए हमेशा उपलब्ध रखें ताकि भैंस पर्याप्त पानी पिए और दूध उत्पादन प्रभावित न हो. खनिज मिश्रण और नमक चाट नियमित रूप से देना चाहिए, इससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है. ठंड के मौसम में विटामिन-ए और डी की सप्लीमेंट भी पशु चिकित्सक की सलाह से देना उपयोगी होता है. ठंड लगने से निमोनिया, खांसी, बुखार और जोड़ों में दर्द जैसी समस्याएँ भैंसों में अधिक देखने को मिलती हैं, इसलिए उनके व्यवहार पर नजर रखना जरूरी है.

दुधारू भैंसों के थनों की खास देखभाल जरूरी है; दूध दुहने के बाद गुनगुने पानी से सफाई और थनों पर तेल या घी की हल्की मालिश ठंड से होने वाली सूजन और दरारों से बचाती है. गर्भवती भैंसों को विशेष गर्माहट और पौष्टिक आहार देना चाहिए ताकि बछड़े का विकास सही रहे. नियमित व्यायाम के लिए दिन में थोड़ी देर धूप में छोड़ना भी बहुत लाभदायक होता है.

नकदी फसल मिर्च : कम लागत दुगुनी आय

मिर्च की खेती आज नकदी फसलों में तेजी से उभरता विकल्प बन रही है, क्योंकि इससे किसानों को लागत के मुकाबले अधिक लाभ प्राप्त हो रहा है. भारत में मिर्च का उपयोग खाने के साथ-साथ मसाला उद्योग और अचार निर्माण में बड़े पैमाने पर होता है, इसलिए इसकी मांग पूरे वर्ष बनी रहती है. यही कारण है कि जिन किसानों ने परंपरागत फसलों की जगह मिर्च की खेती अपनाई है, उनकी आमदनी में सकारात्मक बढ़ोतरी देखने को मिली है.

मिर्च की खेती के लिए उपजाऊ दोमट या हल्की काली मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है और सामान्य सिंचाई सुविधा होने पर भी यह फसल अच्छी तरह तैयार हो जाती है. लागत की बात करें तो इसमें खेत की तैयारी, उन्नत बीज, पौध तैयार करना, रोपाई, खाद-उर्वरक और समुचित कीट प्रबंधन पर खर्च होता है. हालांकि धान-गेहूं जैसी मोटी लागत वाली फसलों की तुलना में मिर्च में प्रति बीघा लागत अपेक्षाकृत संतुलित रहती है,

जबकि बाजार में मिलने वाला मूल्य कई गुना अधिक होता है. यही स्थिति इस फसल को किसानों के लिए लाभकारी बनाती है.

मिर्च की फसल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि एक बार पौधे तैयार हो जाने के बाद लम्बे समय तक लगातार तुड़ाई होती रहती है, जिससे किसानों को बार-बार आय का अवसर मिलता है और एकमुश्त बेचने का दबाव नहीं रहता.

हालाँकि मिर्च की खेती में कुछ जोखिम भी हैं, जैसे कीट-रोग का प्रकोप या कीमतों में उतार-चढ़ाव, पर सही जानकारी, समय पर दवा छिड़काव और फसल-बीमा जैसी योजनाएँ इन जोखिमों को काफी हद तक कम कर देती हैं. कई राज्य सरकारें मिर्च उत्पादक किसानों को प्रशिक्षण और सब्सिडी भी प्रदान कर रही हैं, जिससे लागत घटती है और लाभ बढ़ता है. कुल मिलाकर देखा जाए तो मिर्च की खेती एक ऐसी नकदी फसल के रूप में सामने आई है जो किसानों को लगातार आय, बेहतर बाजार संभावनाएँ और उच्च लाभ प्रदान कर रही है. कम क्षेत्र में अधिक उत्पादन और अधिक कीमत मिलने के कारण यह खेती छोटे और सीमांत किसानों के लिए भी आकर्षक बन चुकी है. भविष्य में वैज्ञानिक तरीकों और संगठित विपणन के साथ मिर्च की खेती किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है.